ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department of - History - Subsidiary
5-05-2020 - B.A.I - [2019-20]
Dr. Satyajeet Sarang

★ छठी शताब्दी ई० पूर्व में भारत की राजनीति स्थिति, जैन धर्म और बौद्ध धर्म।

⇒ छठी शताब्दी ई० पू० में मध्य गंगा की घाटी में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ। जिनमें लगभग 62 सम्प्रदायों के बारे में हमें जानकारी मिलती है।

इनमें जैन और बौद्ध सम्प्रदाय प्रमुख थे।

जैन धर्म की स्थापना :- यद्यपि जैन धर्म को संगठित व विकसित करने का श्रेय वर्द्धमान महावीर को दिया जाता है, तथापि वे इस धर्म के संस्थापक नहीं थे। जैनधर्म की स्थापना का श्रेय जैनियों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को जाता है।

⇒ जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्द से बना जिसका अर्थ विजेता (जितेन्द्रिय) है। जैन महात्माओं की निर्ग्रन्थ (बन्धन रहित) तथा जैन धर्म के अधिष्ठाता को तीर्थंकर कहा गया।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव या आदिनाथ थे। ऋषभदेव व अरिष्टनेमि का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

पार्श्वनाथ : 23 तीर्थंकर

- जन्म: महावीर स्वामी के जन्म से 250 वर्ष पूर्व
- पिता: अश्वसेन [काशी के राजा]
- माता: वामादेवी [कौशलस्थल के राजा नरवर्मन की पुत्री]
- पत्नी प्रभावती
- विवरण: यह 23 वें तीर्थंकर थे तथा ऐतिहासिक माने जाते हैं।
- जैन ग्रंथों में पार्श्वनाथ को पुरुषादनीय कहा गया है। इनके अनुयायियों को निर्ग्रन्थ कहा जाता था।

पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित 4 संकल्पों की चातुर्भी कहा गया है।
1. अहिंसा, 2 सत्य, 3. अस्तेय 4. अपरिग्रह। झारखंड के गिरिडीह जिले में सम्मेत शिखर [पारसनाथ पहाड़ी] पर ज्ञान प्राप्ति हुआ थी।

त्रिरत्न [मोक्ष-कैवल्य की प्राप्ति हेतु]

1. सम्यक ज्ञान : वास्तविक ज्ञान।
2. सम्यक दर्शन : सत्य में विश्वास।
3. सम्यक चरित्र : इन्द्रियों व कर्मों पर पूर्ण नियंत्रण।

जैन धर्म की प्रमुख मान्यताएं

जैन धर्म में अहिंसा पर विशेष बल दिया गया है। इसमें कृषि व युद्ध में भाग लेने पर प्रतिबंध लगाया गया है।

जैन धर्म पुनर्जन्म व कर्मवाद में विश्वास करता है उसके अनुसार कर्मफल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण है। बुद्ध धर्म की तरह जैन धर्म में वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं की गई है।

⇒ जैन धर्म संसार की वास्तविकता को स्वीकार करता है पर सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर को नहीं स्वीकृत है।

जैन धर्म में देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है किंतु उनका स्थान जिन से नीचे रखा गया है।

★ जैन धर्मानुसार ज्ञान के तीन स्रोत हैं-
(1.) प्रत्यक्ष (2) अनुमान तथा (3) तीर्थंकरों के वचन।

मोक्ष के पश्चात जीवन आवागमन के चक्र से छुटकारा पा जाता है तथा वह अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन अनन्त वीर्य तथा अनन्त सुख की प्राप्ति कर लेता है। इन्हें जैन शास्त्रों में अनन्त चतुष्ट की संज्ञा प्रदान की गई है।

महावीर ने अपने जीवन काल में ही एक संघ की स्थापना की जिसमें 11 प्रमुख अनुयायी सम्मिलित थे। ये गणधर कहलाए।

प्रमुख जैन तीर्थ स्थल

[1.] अयोध्या: जैन परंपरा में अयोध्या का अत्यंत महत्व है। यहां 5 तीर्थंकरों ने जन्म लिया, जिसमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

[2.] श्रावस्ती: उत्तर प्रदेश में ही स्थित यह तीर्थ तीसरे तीर्थंकर संभवनाथ जी की जन्मभूमि है। इसे सहेत - महेत भी कहते हैं।

[3] कौशांबी: इलाहाबाद - कानपुर के बीच स्थित इस स्थान पर 6 वें तीर्थंकर पद्मप्रभु का जन्म हुआ। यहीं प्रभास नामक पर्वत पर उन्होंने तप किया।

[4.] हस्तिनापुर: कुरुवंश की राजधानी हस्तिनापुर में शांति, कुंथु व अर नामक तीर्थंकरों ने जन्म लिया।

[5.] सम्मेद शिखर: मान्यता है कि झारखंड के हजारीबाग जिले में स्थित इस पर्वत पर 20 तीर्थंकरों ने मुक्ति मिली थी। पार्श्वनाथ द्वारा शरीर त्याग किये थे।

[6.] पावापुरी: बिहार में नालंदा के निकट स्थित इस स्थान पर महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था।

[7.] राजगृह: यहां स्थित 5 पहाड़ों में से एक पर्वत, विपुलांचल पर ही महावीर स्वामी की प्रथम धर्मदेशना हुई थी। → देशना

[8.] कैलाश पर्वत : भद्रा आदि व ऋषभदेव ने निर्वाण प्राप्त किया।

[9.] गिरनार : सौराष्ट्र में जूनागढ़ के निकट स्थित इस स्थान पर तीर्थंकर नेमिनाथ ने निर्वाण प्राप्त किया।

[10.] श्रवणबेलगोला : कर्नाटक में हासन के निकट स्थित इस स्थान पर गोमतेश्वर बाहुबलि की विशालकाय मूर्ति है।

[11.] माउंट आबू : राजस्थान में स्थित इस तीर्थ पर दिलवाड़ा के विख्यात जैन मंदिर हैं, जिनमें संगमरमर की बारीक नक्काशी है।

[12] पाटण व अहमदाबाद : पाटण में 200 और अहमदाबाद में 100 से अधिक जैन मंदिर हैं।

[13] केसरियानाथ : मेवाड़ के इस तीर्थ में ऋषभदेव की मूर्ति की उपासना केसर से की जाती है, जिसके कारण उन्हें केसरिया नाथ कहते हैं।

जैन संगीति [सभा]

★ प्रथम सभा — चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में लगभग 300 ई.पू. में पाटलिपुत्र में सम्पन्न हुई थी। इसमें जैन धर्म के प्रधान भाग 12 अंगों का सम्पादन हुआ। यह सभा स्थूलभद्र एवं सम्भूति विजय नामक स्थविरों की निगरानी में हुई थी।